अभ्यास : प्रश्न तथा उनके उत्तर

1. क्या सलमा को अपने मेहनत का उचित पारिश्रमिक प्राप्त हुआ ? यदि नहीं तो क्यों ?

उत्तर—नहीं, सलमा को अपने मेहनत का उचित परिश्रमिक प्राप्त नहीं हुआ। क्योंकि सलमा ने मखाने को खुद मंडी में न बेचकर आढ़तियाँ को बेचा था, जिसकी वजह से उसे मखाने का उचित मूल्य नहीं मिला। उसे पैसे की जरूरत थी क्योंकि उसे अपने रिश्तेदार का चर्क चुकाना था। तालाब के मालिक को किराया देना था। अपने टूटे घर की मरम्मत करानी थी और फिर उसके पास जगह की कमी थी, इस कारण वह मखाने को अपने पास रखकर मूल्य बढ़ने पर उसे बेचकर मुनाफा भी नहीं कमा सकती थी। आढ़तिया को मखाना बेचने से उसे मखाने का कम मूल्य मिला और आढ़तिए ने कहा कि अच्छी फसल होने की वजह से मखाने का मूल्य नहीं बढ़ा।

2. आर्थिक रूप से सम्पन्न बड़े मखाना उत्पादक किसान अपने फसल को कहाँ बेचेंगे ?

उत्तर—आर्थिक रूप से सम्पन्न बड़े मखाना उत्पादक किसान अपने फसल को शहर के बड़े मंडियों में बेचेंगे। इससे उन्हें अपने उत्पाद की सही कीमत प्राप्त होगी। उन्हें उनके मेहनत का सही फल मिलेगा। बड़े मखाना उत्पादकों के पास सुविधा होने की वजह से वे लोग आसानी से अपने मखाने को लेकर शहर की मंडी में आ सकते हैं और अपने मखाने को बेचकर मुनाफा कमा सकते हैं। वे लोग अपने मखाने को अपने पास रख सकते हैं और मूल्य बढ़ने पर इन्हें बेच सकते हैं, जिससे उन्हें अधिक लाभ होगा।

3. मखाना उत्पादक किसान एवं उनसे जुड़े मजदूरों के काम के हालात और उन्हें प्राप्त होने वाले लाभ या मजदूरी का वर्णन करें ? क्या आप सोचते हैं कि उनके साथ न्याय होता है ?

उत्तर—मखाना उत्पादक किसान एवं उनसे जुड़े मजदूरों के काम बहुत कठिन होते हैं। मखाना उत्पादन करना, उनकी गुंडियों तालाब से निकालकर फिर उनका लावा तैयार करना बहुत मुश्किल

का काम होता है, इसके लिए मजदूरों का कुशल होना आवश्यक है। कुछ छोटे किसान ही कर्ज लेकर मखाना उत्पादन करते हैं। छोटे किसानों को पैसे की आवश्यकता तुरंत होती है और उनके पास जगह की कमी के कारण वे मखाने को अपने पास रखकर मूल्य बढ़ने पर बेच भी नहीं सकते। इसी कारण वे लोग अपना मखाना आढ़तिए को बेच देते हैं, जिससे उन्हें मखाने का सही मूल्य नहीं मिलता। जिससे उन्हें बहुत नुकसान होता है और उन्हें अपने मेहनत का फल भी नहीं मिलता। इसी तरह गुड़ियो से लावा निकालने का काम करने वालों और गुड़ियो से लावा निकालने वाली को भी उनकी मेहनत के हिसाब से मजदूरी नहीं मिलती। 2.5 किलो गुड़ी का लावा निकालने पर उन्हें आधा किलो गुड़ी दी जाती है।

नहीं उनके साथ न्याय नहीं होता, उन्हें उनके मेहनत के हिसाब से लाभ या मजदूरी नहीं मिलती।

4. पीने के लिए चाय बनाने में चीनी दूध तथा चाय पत्ती का प्रयोग होता है। आपस में चर्चा करें कि ये वस्तुएँ बाजार की किस शृंखला से होते हुए आप तक पहुँचती है ? क्या आप उन सब लोगों के बारे में सोच सकते हैं जिन्होंने इन वस्तुओं के उत्पदन एवं व्यापार में मदद की होगी ?

उत्तर—चीनी गन्नों के द्वारा चीनी मिल में बनाई जाती है, फिर वहाँ से चीनी थोक मंडी में पहुँचती है वहाँ से खुदरा व्यापारी के पास पहुँचती है और वहाँ से उपभोक्ता के पास।

चाय की खेती मुख्यतः आसाम में होती है। यह पत्ते के रूप में उपजाई जाती है, फिर इसे मशीनों में डालकर छोटे-छोटे दानों का रूप देते हैं, पर इसे पैक कर थोक व्यापारियों के पास भेजा जाता है, वहाँ से खुदरा दुकान के पास और वहाँ से उपभोक्ता के पास।

दूध उत्पादन ग्वाले करते हैं और फिर ये हमारे घर पर आकर दूध देते हैं या फिर बाजारों में भी पाश्च्युकृत किया हुआ दूध पैकेटों में उपलब्ध होता है।

5. यहाँ दिये गये कथनों का सही क्रम में सजाएं और फिर नीचे बने गोलों में सही क्रम के अंक भर दें। प्रथम दो गोलों में आपके लिए पहले से ही अंक भर दिये गये हैं।

(i) सलमा मखाना उपजाती है।

(ii) स्थानीय आढ़तिया पटना के थोक व्यापारी को बेचता है।

(iii) आशापुर में मखाना का लावा बनवाने लाती है।

(iv) खाड़ी देशों को निर्यात करते हैं।

(v) दिल्ली के व्यापारियों को बेचते हैं।

(vi) मजदूर गुड़ियों को इकट्ठा करते हैं।

(vii) सलमा आशापुर के आढ़तियों को मखाना बेचती है।

(viii) आशापुर में गुड़िया से लावा बनाया जाता है।

(ix) खुदरा व्यापारी को बेचते हैं।

(x) उपभोक्ता को प्राप्त होता है।

उत्तर—(i) सलमा मखाना उपजाती है। (ii) आशापुर में गुड़ियों से लावा बनाया जाता है। (iii) मजदूर गुड़िया इकट्ठा करते हैं। (iv) आशापुर में मखाना का लावा बनवाने लाती है। (v) सलमा आशापुर के आढ़तियों को मखाना बेचती है। (vi) आढ़तिया पटना के थोक व्यापारी को मखाना बेचती है। (vii) दिल्ली के व्यापारियों को बेचते हैं। (viii) खाड़ी देशों को निर्यात करते हैं। (ix) खुदरा व्यापारी को बेचते हैं। (x) उपभोक्ता को प्राप्त होता है।

●